मॉड्यूल – कोविड–19 की अवधि में शैक्षिक नवाचार

भाग – 1	भाग – 2	भाग – 3
कोविड काल में लर्निंग लॉस पर हुए प्रमुख सर्वेक्षण	ऑनलाइन/दूरस्थ शिक्षण में चुनौतियां	कोविड –19 की अवधि में बच्चों के सीखने में हुई क्षति को कम करने के लिए किए गए नवाचार

शीर्षक :

कोविड- 19 अवधि में शैक्षिक नवाचार

सारांश

वर्ष 2020-21 हम सभी के लिए कोविड की दुःखद त्रासदी के कारण याद रहेगा। इस अवधि में पूरे विश्व में मानव की लगभग सभी गतिविधियां बंद रही, हमें अस्पतालों मे रहना पड़ा और हमारे कई मित्रों, सहपाठियों और रिश्तेदारों को खोना पड़ा। हमारे विद्यालय भी बंद रहे। शिक्षक और विद्यार्थी एक दूसरे से दूर रहे। विद्यालय बंद रहने से लगभग सभी स्तरों पर अधिगम क्षति हुई। तीन भागों के इस माड्यूल में कोविड काल में विद्यार्थियों की अधिगम क्षति, दूरवर्ती, ऑनलाइन, शिक्षण में आई कठिनाइयों और शिक्षकों द्वारा किए गए नवाचारों पर चर्चा की गयी है। सामान्य परिस्थिति निर्मित होने पर यह मॉड्यूल प्रधानाध्यापकों को शिक्षण-अधिगम को निरंतर बनाए रखने के लिए वैचारिक रूप से प्रोत्साहित करेगा।

उद्देश्य :

इस मॉड्यूल के प्रमुख उददेश्य हैं-

1. शिक्षक कोविड-19 की कठिन परिस्थिति के बीच विद्यार्थियों के सीखने में लगातार हो रहे लर्निंग लॉस की समस्या की गंभीरता को जान सकेंगे।
2. कोविड-19 की अवधि में सीखने की कमी के प्रभाव को कम करने के लिए शिक्षकों द्वारा किए गए नवाचार को समझेगें।

परिचय

इस सदी में कोविड-19 महामारी बच्चों की शिक्षा की राह में एक बड़ी चुनौती बन कर आई। बच्चों के स्कूल एक बार जो बंद हुए, तो लगभग डेढ़ वर्ष तक खुल ही नहीं पाए। इस अवधि में एक ओर तो बच्चे नई दक्षताएँ सीख नहीं पा रहे थे, तो दूसरी ओर अभ्यास बंद होने से पिछली कक्षाओं में सीखी हुई दक्षताओं में भी कमी आ रही थी। सत्र 2020-21 में कक्षा एक में प्रवेश लेने वाला बच्चा बिना स्कूल गये ही कक्षा दो में चला गया। जो बच्चा 2019-20 में कक्षा पहली में था और पढ़ना-लिखना सीखने के बिल्कुल शुरुआती दौर में था, वह कक्षा तीसरी में चला गया। इस अवधि में बच्चों की शिक्षा पर पड़ने वाला विपरीत प्रभाव कल्पनातीत है। इसके प्रभाव दूरगामी होंगे और यदि इन प्रभावों को निष्प्रभावी करने के लिए समुचित उपाय न किये गये, तो ये पूरी एक पीढ़ी को प्रभावित कर सकते हैं।

कोविड-19 की विषम परिस्थिति में उपरोक्त संभावनाओं का अनुमान लगाते हुए, बच्चों में सीखने की कमी को कम करने के लिए हमारे कई शिक्षकों द्वारा नवाचार करके बच्चों को शिक्षा से जोड़े रखने के प्रयास किए गए हैं। सीखने की प्रक्रिया में 'सीखने' को 'प्रतिफल' तक पहुंचने के लिए अभ्यास बहुत महत्त्वपूर्ण और आवश्यक होता है। जब

सीखने की प्रक्रिया और अभ्यास दोनों ही बाधित हो, तो सीखने का प्रतिफल कितना प्रभावित होगा यह कल्पनातीत है। बच्चों की शिक्षा की राह में आने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए प्रशासनिक और अकादमिक स्तर पर किए जाने वाले कार्यों के अलावा हमारे शिक्षकों द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर लगातार ऐसे अनोखे प्रयास किए जाते रहे हैं, जिनका उल्लेख शासकीय आदेशों-निर्देशों में नहीं होता, अथवा उन निर्देशों के परिपालन की पूर्णता में आने वाली चुनौतियों के समाधान के लिए जरूरी होते हैं।

सैद्धांतिक पक्ष : प्रारम्भिक शिक्षा स्तर पर सभी प्रकार का शिक्षण-अधिगम राज्य की पाठ्यचर्या के अनुसार और अधिगम प्रतिफलों पर केन्द्रित होता है। इस सन्दर्भ में विद्यालयों से यह अपेक्षा की जाती है, कि वे एक निश्चित अवधि में सभी विद्यार्थियों में विषयगत और कक्षा वार अधिगम प्रतिफलों को अर्जित करवाएं। उसी प्रकार यदि किन्हीं कारणों से अधिगम क्रिया में अंतराल आ जाए तो उसके लिए वैकल्पित अधिगम उपाय किए जाने होते हैं।

अधिगम प्रतिफल : सभी शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं का मूल उददेश्य यह होता है, कि बच्चे उनकी कक्षा और विषय के लिए निर्धारित अधिगम प्रतिफलों को प्राप्त करें। अधिगम प्रतिफल वास्तव में दक्षताओं का एक समूह होता है, और जब कोई विद्यार्थी किसी विषयांश की सभी दक्षताओं को अर्जित कर लेता है, तब वह किसी इकाई के लिए निर्धारित अधिगम को प्राप्त करता है। उल्लेखनीय है, कि यदि अधिगम प्रतिफल से सम्बंधित एक भी दक्षता अर्जित नहीं हो सकी, तो अधिगम प्रतिफल को पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं किया जा सकता। कोविड काल में विद्यालय बंद रहने से विद्यार्थियों की दक्षता में कमी आई। कई विद्यार्थी तो अर्जित की जा चुकी दक्षता को अभ्यास के अभाव में भूल गए।

अधिगम क्षति : जब बच्चे अपने सीखने की सामान्य गति से नहीं सीख पा रहे होते, तो हम इसे ही उनके सीखने में कमी, सीखने की क्षति (Learning Loss) कहते हैं । लर्निंग लॉस से तात्पर्य ज्ञान एवं कौशलों के सीखने में आई क्षति से है जिससे विद्यार्थी की अकादमिक प्रगति में रुकावट आ जाती है। इसके कई कारण हो सकते हैं। वर्तमान में कोविड काल के कारण लर्निंग लॉस हुआ है।

दूरवर्ती शिक्षण : जब विद्यार्थी और शिक्षक के मध्य भौतिक दूरी हो और वे एक सीखने के लिए एक दूसरे से सम्पर्क नहीं कर पाते तब दूरस्थ शिक्षण ही एक मात्र विधा है, जिसके माध्यम से शिक्षण कार्य किया जा सकता है। दूरवर्ती के अंतर्गत इसे दूरस्थ शिक्षण या रिमोट शिक्षण भी कहा जा सकता है। इस विधा में शिक्षक और विद्यार्थी के मध्य भौतिक दूरी को तकनीकी द्वारा कम किया जाता है।

स्व-अधिगम : स्वयं के द्वारा किया गया अधिगम या सीखना स्व-अधिगम कहा जाता है। स्व-अधिगम तभी होता है, जब विद्यार्थी सीखने के प्रति अत्यंत प्रेरित हो। कोविड काल में अधिकांश विद्यार्थियों ने स्व-अधिगम ही किया है। उन्हें उनके पालकों और स्थानीय शिक्षकों द्वारा प्रेरित किया जाता रहा।

ऑनलाइन शिक्षण : शिक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग के अंतर्गत ऑनलाइन अधिगम और शिक्षण अत्यधिक प्रचलन में है। ऑनलाइन शिक्षण प्रणाली को सभी प्रकार इलेक्ट्रोनिक्स समर्पित शिक्षा और अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जाता है जो स्वाभाविक तौर पर क्रियात्मक होते हैं और जिनका उद्देश्य शिक्षार्थी के व्यक्तिगत अनुभव ज्ञान अभ्यास और ज्ञान के सन्दर्भ में ज्ञान का निर्माण को प्रभावित करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा - 2005 में अपेक्षा की गई है, कि बच्चे ज्ञानात्मक तथ्यों को रटने की बजाय अपने ज्ञान का सृजन स्वयं करें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कौशल के अर्जन पर बहुत जोर दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बिंदु क्रमांक 23 और 24 में शिक्षा में प्रौद्योगिकी के अधिकतम उपयोग और इन पर शिक्षकों को प्रशिक्षित करने की अनुशंसा की गयी है।

जरा सोचिए

- क्या आपने कभी किसी दूर-शिक्षा विश्वविद्यालयों से कोई कोर्स पूरा किया है, आप उसके लिए कैसे प्रेरित हुए?
- क्या आपने कभी वीडियो कान्फ्रेंसिंग में सहभागिता की है या देखी है? आपको इनमें क्या विशेषता परिलक्षित हुई? क्या इनमें कुछ सीमाएँ भी हैं?

स्व-आकलन

1. अपने विषय से सम्बंधित किसी कक्षा के लिए कोई एक अधिगम प्रतिफल लिखें.

.....

2. क्या आपने कभी दूरस्थ शिक्षण के माध्यम से कोई कोर्स किया है? यदि हाँ, तो आपने अपने शिक्षक से किन-किन माध्यमों से सम्पर्क किया था? यदि नहीं, तो आपके विचार में यह सम्पर्क किस-किस प्रकार से किया जा सकता है? कोई 4 माध्यम लिखें।
3. अधिगम-क्षति को आप अपनी भाषा में लिखिए।
4. ऑनलाइन पद्धति से क्या आप संतुष्ट हैं? यदि हाँ तो क्यों /नहीं तो क्यों?

भाग - 1 :

कोविड काल में लर्निंग लॉस पर हुए प्रमुख सर्वेक्षण

परिचय

हमारे प्रदेश की ज्यादातर आबादी गांव में रहती है। कोविड-19 अवधि में कक्षा-गत शैक्षणिक प्रक्रियाएं लगभग बंद हो चुकी थीं। शासकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले ज्यादातर बच्चों के अभिभावक शिक्षित नहीं होने के कारण वह सहायता प्रदान नहीं कर पाते हैं। बच्चे भी घर में पर्याप्त अभ्यास नहीं कर पाते हैं। इस स्थिति में यह नुकसान दो प्रकार से हुआ। एक तो बाधाओं के कारण बच्चा अपनी सीखने की स्वाभाविक गति से नहीं सीख पाया, तो दूसरा सीखे हुए का अभ्यास न हो पाने के कारण सीखने की बाधित प्रक्रिया उसे वास्तविक प्रतिफल तक नहीं पहुंचने देती। यह भी सीखने में क्षति या सीखने में कमी ही है।

कोविड ने पूरे देश को लगभग पूरे वर्ष प्रभावित किया। यह प्रभाव बच्चों की मानसिक स्थिति, उनके व्यवहार परिवर्तन, स्वास्थ्य और अधिगम पर हुआ। देश की कई प्रमुख संस्थाओं द्वारा कोविड काल में अधिगम पर हुए प्रभावों का एक शोध सर्वेक्षण किया है. इन सर्वेक्षणों का प्रकार और इनके निष्कर्ष आगे दिए गए हैं।

यूनिसेफ सर्वेक्षण

यूनिसेफ द्वारा छः राज्यों के चयनित विद्यालयों में सर्वेक्षण किया गया। इस सर्वेक्षण के प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार हैं -

भाषा में सीखने की क्षति

- 92 प्रतिशत बच्चों में कोविड-19 के दौरान कम से कम उस एक दक्षता में कमी आ गई जो उसने पिछले वर्षों में सीखी थी।
- इन दक्षताओं में किसी चित्र के बारे में बताने, शब्दों को पढ़ पाने, समझ के साथ पढ़ने, किसी चित्र पर सामान्य वाक्य लिख पाने जैसी दक्षताएं शामिल हैं।
- 92% विद्यार्थी कक्षा 2 के, 89% कक्षा 3 के, 90% कक्षा 4 के, 95% कक्षा 5 के एवं 93% कक्षा 6 के विद्यार्थियों ने पिछले वर्ष कम से कम एक दक्षता में कमी पाई।

गणित में सीखने में क्षति

- औसतन 82% विद्यार्थियों में उनकी पिछले साल की दक्षता में से कम से कम एक दक्षता में कमी आई।
- इन दक्षताओं में एक या दो अंकों की संख्याएं, अंकगणितीय अनुप्रयोग आदि शामिल हैं।
- 67% विद्यार्थी कक्षा 2, 76% प्रतिशत कक्षा 3, 85% कक्षा 4, 89% कक्षा 5 और 89% कक्षा 6 के विद्यार्थियों की पिछले साल की दक्षता से कम से कम एक दक्षता में कमी आई है।

अजीम प्रेमजी विश्व विद्यालय का सर्वेक्षण

अजीम प्रेम जी फाउंडेशन द्वारा माह जनवरी 2021 में किये गए सर्वेक्षण अनुसार कोविड 19 महामारी के दौरान विद्यालय बंद रहने के कारण विद्यार्थियों में भूलने की प्रवृत्ति बढ़ी है जिससे लर्निंग लॉस बढ़ा है (अर्थात जो विद्यार्थियों ने पहले सीखा था वह अब भूल गए हैं।) इस सर्वेक्षण के अनुसार प्रदेश के 44 जिलों के 1137 विद्यालयों के 16067 विद्यार्थियों का अध्ययन से पता चला है कि विद्यार्थियों में लर्निंग बढ़ा है।

जरा सोचिए

- अधिगम में क्षति के इन ऑकड़ों को देखकर आपके मन में क्या विचार आता है? क्या यह क्षति सहन की जा सकती है? क्या इससे विद्यार्थियों पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा?
- क्या इन आंकड़ों में कमी लाई जा सकती थी? कैसे?
- आपके विचार में क्या इस कमी का कारण केवल कोविड ही है? क्यों?
- क्या आपके जिले या राज्य में भी ऐसा कोई सर्वेक्षण हुआ है? उसके क्या परिणाम रहे? जानकारी प्राप्त करें। उपरोक्त प्रश्नों पर अपने शिक्षक सहपाठियों से भी चर्चा करें।

भाग - 2 :

दूरस्थ शिक्षण में चुनौतियाँ

परिचय

भारत की 69% आबादी गाँवों में रहती है। यह एक तथ्य है कि सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले ज्यादातर बच्चे बहुत ही गरीब परिवार से आते हैं। इन परिवारों के बच्चों को कोविड काल में शिक्षकों से संपर्क व उस संपर्क के दौरान सभी बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में लगाकर रख पाना मुश्किल कार्य था। ऐसे में केवल दूरवर्ती पद्धति और ऑनलाइन शिक्षण ही वह माध्यम हो सकता था, जिसके द्वारा बच्चों को सीखने-सिखाने में लगाए रखा जा सकता था। राज्य द्वारा प्रशासनिक स्तर पर ऑनलाइन शिक्षण की योजना बनाकर आदेश-निर्देश तो प्रसारित कर दिए गये, किंतु इसे क्रियान्वित कर पाना एक बड़ा चुनौतीपूर्ण और मुश्किल कार्य था। इसके लिए अधिकाँश विद्यालयों को निम्नलिखित शैक्षिक, तकनीकी और प्रबंधकीय समस्याओं का सामना करना पड़ा।

प्रबंधकीय चुनौतियाँ

- अधिकांश गरीब परिवारों के पास साधारण मोबाइल फोन भी उपलब्ध नहीं हैं।
- परिवार में 2-3 विद्यार्थियों के बीच एक ही मोबाइल फोन का होना।
- एंड्रॉयड फोन बहुत कम लोगों के पास होने के कारण, अधिकांश अभिभावकों और बच्चों से फोन के द्वारा संपर्क अथवा उन्हें डिजिटल शैक्षिक सामग्री भेजना संभव नहीं होता।
- दिव्यांग विद्यार्थियों के साथ तकनीकी समस्याएं।
- फोन खराब न हो जाए इसलिए बच्चों को पालकों द्वारा मोबाइल फोन न देना।
- कई परिवारों में टीवी या रेडियो तक ना होना।

तकनीकी चुनौतियाँ

- सीखने के लिए मोबाइल के उपयोग का अल्प तकनीकी ज्ञान होना।
- ग्रामीण क्षेत्र में इंटरनेट कनेक्टिविटी बहुत कम होने के कारण जिनके पास एंड्रॉयड फोन एवं इंटरनेट है, वे भी भेजी गई सामग्री का उपयोग नहीं कर पाते।
- डेटा का अत्यधिक उपयोग।

शैक्षिक चुनौतियाँ

- शिक्षकों और विद्यार्थियों को डिजिटल सामग्री के स्त्रोतों का ज्ञान नहीं होना।

- विद्यार्थियों का ऑनलाइन आकलन न कर पाना।
- विद्यार्थियों को प्रेरित करना और उनके गृह कार्य की जांच न कर पाना।
- प्रत्येक विद्यार्थी को अलग-अलग समाधान न दे पाना।

जरा सोचिए

1) आपने इन चुनौतियों के अतिरिक्त कौन सी चुनौती अनुभव की है ? कोई 3 लिखें.

1 .....

2 .....

3 .....

2) इन चुनौतियों का समाधान आपने कैसे किया ?

.....

आइए ऐसी ही चुनौतियों का समाधान एक विद्यालय द्वारा कैसे किया गया देखते हैं।

केसलेट- शासकीय माध्यमिक शाला, धनगाँव, खंडवा

कोविड-19 महामारी की अवधि में बच्चों की कक्षा-गत प्रक्रियाओं के बंद हो जाने से उनके सीखने में निरन्तर कमी की संभावना बढ़ती जा रही थी। ऐसे समय में इस समस्या का यथासंभव समाधान निकाल कर कई नवाचारी शिक्षक सक्रिय थे। कोविड-19 की अवधि में जब शेष विश्व के अधिकांश क्षेत्र के साथ भारत में भी लॉकडाउन लगा दिया गया। सभी तरह की गतिविधियों के साथ शैक्षिक गतिविधियाँ भी पूरी तरह बंद हो चुकी थी। महामारी के बढ़ते प्रकोप और लॉकडाउन की अवधि बार-बार बढ़ने से शैक्षिक प्रक्रियाओं के शीघ्र शुरू होने की संभावना कम होती जा रही थी। ऐसी स्थिति में बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य की चिंता स्वाभाविक थी। अभिभावकों के साथ-साथ सरकार एवं शिक्षकों के मन में चिंताएं भी थी। विद्यालय के शिक्षकों की प्रमुख समस्याएँ इस प्रकार थीं।

(1) बच्चों और उनके माता-पिता व अभिभावकों को कोविड-19 महामारी से बचाव के प्रति कैसे जागरूक किया जाए?

(2) कक्षागत प्रक्रियाएँ बंद रहने की स्थिति में बच्चों को पढ़ने-लिखने की गतिविधियों से कैसे जोड़े रखा जाए?

(3) ऐसा क्या किया जाए कि बच्चे पिछली सीखी हुई दक्षता को भूलने न पाएँ?

(4) ऐसा क्या किया जाए कि बच्चे आगे की दक्षताएँ भी सीखें?

(5) कक्षाएँ न लगने के बावजूद बच्चों में सीखने-सिखाने की रुचि कैसे बनी रहे?

उपरोक्त समस्याओं के समाधान के लिए विद्यालय के शिक्षकों ने चर्चा उपरांत निम्न संभावित उपाय सोचे

1. बच्चों और उनके अभिभावकों से फोन पर अथवा व्यक्तिगत रूप से संपर्क करके कोविड -19 महामारी से बचाव के तरीकों के बारे में बताया जाए और जागरूक किया जाए।
2. बच्चों से फोन पर ही पढ़ने-लिखने की बातें करके उनमें सीखने-सिखाने के प्रति रुचि बनाए रखा जाए।
3. बच्चों को उनकी उम्र, कक्षा और स्तर के अनुसार कुछ गतिविधियाँ करने को कहा जाए एवं उनके माता-पिता, बड़े भाई-बहन, अभिभावकों को भी बच्चों का सहयोग करने का आग्रह किया जाए।
4. बच्चों को पिछली कक्षाओं की दक्षताओं से जुड़ी गतिविधियाँ घर पर ही करने के लिए कहें।
5. इंटरनेट युक्त मोबाइल फोन के द्वारा बच्चों तक लगातार दक्षता आधारित रुचिकर सामग्री भेजी जाए।
6. बच्चों तक कुछ रोचक और दक्षता आधारित सामग्री पहुंचाई जाए जिससे उनके भीतर सीखने- सिखाने की रुचि बनी रहे।
7. बच्चों के पास कुछ अभ्यास योग्य सामग्री भेजने एवं उनके द्वारा किए गए अभ्यास को देखकर सुधारात्मक सुझाव दिए जाएँ।
8. बहुत सीमित संख्या वाले समूहों में बच्चों को बैठकर पढ़ने की कुछ व्यवस्था की जाए, ताकि बच्चे कोरोना से बचाव की सावधानियों के साथ में सीखने-सिखाने का काम भी कर सकें।

भाग - 3 :
कोविड 19 की अवधि में बच्चों के सीखने में हुई क्षति को कम करने के लिए किए गए नवाचार

परिचय (ओटला स्कूल)

(ओटला-गाँव में घर की बाहरी दीवार से लगा हुआ एक चबूतरा या चौड़ी बेंचनुमा पट्टी बनाने का चलन होता है। इसे ही चौरा चबूतरा, पट्टी अथवा ओटला कहते हैं। निमाड़ में इसे ओटला ही कहते हैं। यहाँ सुबह-शाम बच्चे और कभी-कभी बड़े-बुजुर्ग भी बैठकर बातचीत करते हैं।)

मध्यप्रदेश के खंडवा जिला मुख्यालय से खंडवा-इंदौर मार्ग पर 50 किलोमीटर दूर स्थित गाँव धनगाँव की आबादी लगभग 4000 है। यहाँ आबादी का लगभग आधा हिस्सा मजदूर वर्ग का है। यहाँ स्थित शासकीय माध्यमिक शाला धनगांव में अधिकांश बच्चे मजदूर परिवारों से ही आते हैं। राजेश चन्द्र चौरे यहीं एक शिक्षक के रूप में सेवाएं दे रहे हैं। मार्च 2020 में कोविड-19 महामारी के लगातार प्रकोप के कारण बच्चों के कक्षा से दूर हो जाने के कारण उनके सीखने में हो रही कमी और निकट भविष्य में शालाएँ खुलने की संभावना न पाकर राज्य शिक्षा केंद्र भोपाल, मध्यप्रदेश ने 'हमारा घर हमारा विद्यालय', डिजीलैप, रेडियो स्कूल आदि कार्यक्रम प्रारंभ किये, किंतु इस कार्यक्रम की वास्तविक सफलता के लिए पालकों, अभिभावकों, और बच्चों के माता-पिता के पास इंटरनेटयुक्त एंड्राइड मोबाइल फोन और रेडियो की अनिवार्य आवश्यकता थी। शासकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले ज्यादातर बच्चे गरीब और मजदूर परिवारों से आते हैं। उनके पास एंड्रॉयड फोन, इंटरनेट संबद्धता और रेडियो सेट, टीवी आदि का अभाव प्रायः देखा गया है। ऐसी स्थिति में उन्हें राज्य शिक्षा केंद्र के कार्यक्रमों से जोड़ते हुए सीखना-सिखाना से जोड़े रख पाना संभव नहीं था। शिक्षक कई तरह से इन समस्याओं का समाधान ढूंढ़ रहे थे। ऐसे में शासकीय माध्यमिक शाला धनगांव के शिक्षक ने एक सफल नवाचार किया। बच्चे कोविड-19 की पहली लहर की अवधि में दूरवर्ती डिजिटल सामग्री प्राप्त नहीं कर पा रहे थे। शिक्षक भी उन तक नहीं पहुंच पा रहे थे, तब शिक्षक ने 'ओटला स्कूल' की अवधारणा को जीवंत कर के बच्चों को न केवल दूरवर्ती डिजिटल सामग्री, डिजीलैप वीडियो, व्हाट्सएप आदि का उपयोग संभव बनाया, बल्कि ग्राम समाज के कुछ पढ़े-लिखे नवयुवकों के भीतर समाज के लिये, बच्चों के लिये, शिक्षा के लिये कुछ करने के साथ आत्मसम्मान व सेवा की भावना से भरा गौरव भी पैदा किया।

समस्या समाधान की प्रक्रिया

- सबसे पहले शिक्षक ने शाला प्रबंधन समिति के सदस्यों से अनौपचारिक बातचीत कर उन्हें अपनी 'ओटला स्कूल' की योजना के संबंध में बताया।
- शिक्षक के विचार को समझते हुए सभी सदस्य न केवल सहमत हुए, बल्कि स्वयंसेवी शिक्षकों के लिए युवकों-युवतियों को तैयार करने में बड़ी भूमिका निभाई। आवश्यक संसाधन जुटाने में भी सहयोग किया।
- ओटला स्कूल के लिए शिक्षक ने गांव के 12 पढ़े-लिखे युवक-युवतियों को चुना और उन्हें कोविड-19 की कठिन स्थिति के बीच भी एसएमसी के सदस्यों के सहयोग से बच्चों के छोटे-छोटे समूहों को पढ़ाने-लिखाने के लिए तैयार किया।
- प्रत्येक ओटला स्कूल के लिए सुरक्षा किट की व्यवस्था की। इस सुरक्षा किट में सभी बच्चों एवं स्वयंसेवी शिक्षकों के लिए पर्याप्तमात्रा में मास्क, सैनिटाइजर आदि रखे गए।
- बच्चों को अभ्यास पुस्तिका, पेन, पेंसिल, स्लेट आदि भी उपलब्ध कराये। इस तरह 12 'ओटला स्कूलों' के माध्यम से बच्चे डिजीलैप, व्हाट्सएप के साथ किताबों और लिखने-पढ़ने आदि के अभ्यास कार्य से जुड़ गए।
- इन स्कूलों में बच्चों को उनकी कक्षा और उनके स्तर अनुसार शिक्षा दी जा रही थी। इन सभी ओटला स्कूलों से शासकीय माध्यमिक शाला धनगाँव के सभी शिक्षक राजेश चंद्र चौरे के नेतृत्व में लगातार संपर्क में रहते थे व उचित मार्गदर्शन प्रदान करते थे।
- ओटला स्कूल को देखने के लिए मीडिया कर्मी भी आने लगे।

ओटला स्कूल अब पूरे मध्यप्रदेश का 'मोहल्ला क्लास' बन गया

ओटला स्कूल से सम्बंधित वीडियो देखने के लिए क्लिक करें:-

https://youtu.be/n6Z3NTFI90Y	ओटला स्कूल की कहानी टीवी पर
https://youtu.be/fmYCNzBxLng	ओटला स्कूल की कहानी टीवी पर
https://youtu.be/YgV5XIDay8k	मोहल्ला क्लास में गणित दिवस का आयोजन

जरा सोचिए

1. ओटला स्कूल के प्रधानाध्यापक यदि विद्यालय प्रबंधन समिति को विश्वास में नहीं लेते तो क्या यह योजना सफल हो पाती? क्या यह करना अनिवार्य था?
2. क्या ऐसे कार्य में स्थानीय और तकनीकी रूप से सक्षम व्यक्तियों का सहयोग मिलना आसान होता ?
3. क्या एक बड़ी कक्षा के विद्यार्थी का छोटी कक्षा के विद्यार्थी को पढ़ाना उचित है? 'हाँ' और 'ना' दोनों स्थितियों में क्यों ?

कोविड काल में शैक्षिक नवाचार

मार्च 2020 में विद्यालय बंद होने पर राज्य शिक्षा केंद्र भोपाल, मध्यप्रदेश ने हमारा घर हमारा विद्यालय और रेडियो स्कूल की शुरुआत की। साथ ही डिजीलैप कार्यक्रम की शुरुआत व्हाट्सएप समूहों के माध्यम से की गई। ये व्हाट्सएप समूह राज्य ने जिला के, जिलों ने ब्लॉक के, ब्लॉक ने जन शिक्षा केंद्रों के, जनशिक्षा केंद्र ने शिक्षकों के और विद्यालय के शिक्षकों ने कक्षावार अभिभावकों के समूह बनाए। अब पहले से बच्चों के सीखने में कमी की समस्या से बेचैन शिक्षकों को कुछ समाधानकारी उपाय और औजार तो मिल गए थे, किंतु जो समस्या सामने आ रही थी, वह विकट थी। कोविड-19 महामारी की अवधि में बच्चों के लिए विद्यालय बंद हो चुके थे। लॉकडाउन के कारण उनका अपने संगी-साथियों से मिलना जुलना नहीं हो रहा था। बस्ता, कॉपी, पेन, किताबों से दूरी बन चुकी थी और इस दूरी की अवधि भी बढ़ती ही जा रही थी। ऐसे में नया सत्र 2020-21 भी शुरू हो रहा था। किंतु, विद्यालय बंद होने से सत्र की शुरुआत प्रतीकात्मक ही थी। बच्चे अगली कक्षा की दक्षताएँ तो सीख ही नहीं रहे थे, उल्टे उनकी पिछली सीखी हुई दक्षताओं में कमी होने का खतरा पैदा हो रहा था। इस बात की चिंता सरकार, शिक्षाविदों, माता-पिता और अभिभावकों के साथ शिक्षकों को भी बेचैन कर रही थी।

स्थितियाँ कितनी भी कठिन हो सकती हैं, किंतु विश्व में शिक्षक ऐसी श्रेणी का होता है जो, बच्चों को शिक्षा देना, उनका सीखना-सिखाना बन्द नहीं होने देता। पेड़ों के नीचे, कच्चे-पक्के घरों के बरामदे में, या ऐसे ही कहीं भी, कैसे भी वह शिक्षा देता ही रहा है। वह कभी रुका नहीं। कोविड-19 महामारी की अवधि में भी वह यह कार्य करता रहा है। चूँकि कोविड-19 महामारी के दौरान महामारी से बचाव के लिए कई तरह के निर्देशों, सावधानियों, जैसे- सामाजिक दूरी, शारीरिक दूरी, मास्क लगाना, सेनीटाइजर का उपयोग आदि की अनिवार्यता थी, तब भी हमारे इन शिक्षकों ने बच्चों को सिखाने के, शिक्षा देने के उपाय खोज ही लिए, इस तरह के उपायों, नवाचारों के बारे में अवश्य ही सब को जानना चाहिए।

केस स्टडी

चलता-फिरता डिजिटल स्कूल

शासकीय माध्यमिक शाला गौरा, भारत के भौगोलिक केंद्र करौंदी ग्राम के निकट और मध्य प्रदेश के कटनी जिला मुख्यालय से 80 किलोमीटर दूर बसे जनजातीय ग्राम गौरा में स्थित है। यहाँ संचालित माध्यमिक शाला गौरा में पढ़ने वाले दिहाड़ी मजदूर परिवार से हैं। शेष सीमांत कृषक परिवारों से आते हैं। इनके पास किसी तरह की डिजिटल डिवाइस नहीं होने से कोविड-19 की अवधि में डिजीलेप, व्हाट्सएप, ऑनलाइन शिक्षण आदि का लाभ उठाने में यह बच्चे असमर्थ थे। परिणाम स्वरूप बच्चे मोहल्ला कक्षाओं में भी नहीं आ रहे थे। इस समस्या के समाधान के लिए माध्यमिक शाला गौरा ने एक चलित डिजिटल स्कूल की शुरुआत की। प्रधानाध्यापक महेंद्र सिंह ठाकुर ने एक हाथ ठेले की व्यवस्था करके उस पर इनवर्टर, साउंड सिस्टम, टीएलएम और स्मार्ट टीवी लगाकर प्रत्येक मोहल्ला कक्षा

में पहुंचते थे। उनके पहुंचने से पहले ही विद्यालय में पदस्थ शेष 5 शिक्षक अपनी-अपनी मोहल्ला कक्षाएं संचालित कर रहे होते थे। प्रत्येक मोहल्ला कक्षा में डिजीलेप वीडियो दिखाया जाता और उस पर चर्चा की जाती थी।

इस चलते-फिरते डिजिटल मोहल्ला स्कूल का प्रभाव यह हुआ, कि जहाँ इसकी शुरुआत से पहले मोहल्ला कक्षाओं में बहुत कम बच्चे आते थे, वहाँ इसके शुरू होने से लगभग सभी बच्चे मोहल्ला कक्षाओं में आने लगे। यह चलती फिरती स्कूल इतनी आकर्षक और मनोरंजक थी, कि बच्चों के लिए इससे आनंददायी वातावरण निर्मित हो गया। अब बच्चों की उपस्थिति और रुचि बढ़ जाने से मोहल्ला कक्षा में बच्चों की उपस्थिति और रूचि बढ़ जाने से शिक्षक अच्छी तरह अध्यापन करा पा रहे थे इस तरह उनकी शिक्षा में आए अवरोध पर नियंत्रण पा लिया गया।

चलता-फिरता पुस्तकालय

प्रदेश के सीधी जिले में श्रीमती उषा दुबे माध्यमिक शिक्षक ने चलता-फिरता पुस्तकालय शासकीय माध्यमिक विद्यालय हर्रई संचालित किया। कोविड-19 की अवधि में बच्चों के सीखने में कमी को कम करने के लिए चिंतित शिक्षकों ने देश भर में अपने-अपने क्षेत्रों में अपनी सीमाओं का अतिक्रमण करके भी नवाचार किये और बच्चों की सीखने में कमी को कम करने में बड़ी भूमिका निभाई। इस अवधि में जब लोगों का मिलना-जुलना, घर से बाहर निकलना, सब कुछ अत्यंत सीमित हो गया था। राज्य शासन के निर्देशानुसार मोहल्ला कक्षाएं, डिजीलैप वीडियो, व्हाट्सएप एसेसमेंट, रेडियो स्कूल कार्यक्रम आदि चल रहे थे। किंतु अभिभावक बच्चों को घरों से निकलने देने में हिचक रहे थे। मोहल्ला कक्षाएं खाली-खाली सी थीं। बच्चे इन कार्यक्रमों में रुचि नहीं ले रहे थे। ऐसे में जरूरत थी कुछ ऐसा करने की, जिसमें बच्चे न सिर्फ सीख सकें बल्कि उनके भीतर मोहल्ला कक्षाओं के प्रति रुचि व आकर्षण पैदा हो। कक्षाएँ उन्हें आकर्षित कर सकें। यही सोचते हुए सीधी जिले की श्रीमती उषा दुबे माध्यमिक शिक्षक ने चलित पुस्तकालय प्रारंभ किया। उन्होंने एक फ्रेम बनवाया। वे उस पर पुस्तकें लगाकर अपनी स्कूटी पर निकलती। सभी मोहल्ला कक्षाओं तक उनका यह पुस्तकालय पहुंचता। बच्चे वहीं कहानियां और कविताएं पढ़ते। उन्हें अच्छा लगता, तो वह घर में पढ़ने के लिए भी पुस्तकें ले जाने लगे। इस चलित पुस्तकालय का तात्कालिक लाभ तो यह हुआ, कि बच्चे न सिर्फ मोहल्ला कक्षाओं में आने लगे, बल्कि मोहल्ला कक्षाओं में पढ़ने के साथ उनके मोहल्ला कक्षाओं में आने से रेडियो स्कूल, डिजीलेप, व्हाट्सएप आधारित मूल्यांकन के साथ शेष विषयों पर उनसे बातचीत और सीखना-सिखाना संभव हो गया। कहानियाँ, कविताएं पढ़कर प्रश्न करने लगे। तर्क करने लगे। यह परिवर्तन NCF-2005 और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप ही है। इनका यह चलित पुस्तकालय न सिर्फ चर्चा में रहा बल्कि अन्य विद्यालयों और शिक्षकों ने भी इस प्रारूप को अपनाया।

नवाचार के वीडियो यहाँ देखें

https://youtu.be/OMPonJOThfw	चलता - फिरता पुस्तकालय, हर्रई
https://youtu.be/xP1z3dfCN7U	चलता - फिरता पुस्तकालय, हर्रई

याद रखने योग्य बातें –

मॉड्यूल के भाग 1 में हमने सीखा कि –

- बच्चों के नई दक्षताओं के नहीं सीख पाने के साथ-साथ पुरानी सीखी हुई दक्षताओं में कमी होने का खतरा पैदा हो जाता है।
- अधिगम क्षति को कम करने के लिए शिक्षकों को विद्यार्थियों की अतिरिक्त सहायता करनी होगी।

मॉड्यूल के भाग 2 में हमने सीखा कि –

- समस्याओं की उपस्थिति किसी रास्ते पर चलने वालों का पथ हमेशा के लिए अवरुद्ध नहीं कर पाती। उल्टे वह नई-नई तकनीकों, नये और समाधानकारी उपायों के अनुसंधान और प्रयोग का अवसर बन जाती है।
- कोविड-19 भी बच्चों की शिक्षा की राह में बड़ी बाधा बनकर आया। बच्चों के सीखने-सिखाने की राह चुनौतियों से भर गई। बच्चे, शिक्षक, अभिभावक सभी चुनौतियों के कारण विचलित हो रहे थे, किंतु सरकारों, स्वयंसेवी संस्थाओं और शिक्षकों ने कई नवाचारों के द्वारा बच्चों के सीखने की कमी को कम करने के सफल प्रयास किये हैं।
- मुश्किल समय में भी रास्ते निकाले जा सकते हैं। समुदाय से भी सहयोग प्राप्त किया जा सकता है।
- किसी भी समय में किए गए नवाचार अपने उस समय में तो परिणाम देते ही हैं, किंतु कुछ नवाचार ऐसे भी होते हैं, जिनका प्रभाव आगे आने वाले सामान्य दिनों में बना रहता है। इन्हें सामान्य दिनों में भी अपनाया जा सकता है।

मॉड्यूल के भाग 3 में हमने सीखा कि –

- कोविड-19 की अवधि में विद्यालय बंद होने के कारण कक्षागत शैक्षणिक प्रक्रियाएँ ही नहीं, दूसरी तरह की शैक्षणिक गतिविधियाँ भी स्थगित-सी हो गईं थीं, किन्तु नवाचारों के माध्यम से उन्हें फिर से स्थापित किया जा सकता है।
- कठिन समय में भी बच्चों का सीखना - सिखाना बनाए रखा जा सकता है, और ऐसे समय में किये गये नवाचार सामान्य स्थितियों में भी प्रभावी साबित हो सकते हैं।
- शैक्षिक नवाचार से भरा नेतृत्व सामर्थ्य वाला शिक्षक कठिनतम परिस्थितियों में भी अपने विद्यार्थियों को अकेला नहीं होने देता। वह उन्हें सिखाने का रास्ता खोज ही लेता है।
- कई नवाचारों ने यह प्रमाणित किया है, कि विषम परिस्थितियों में भी लक्ष्य हासिल किया जा सकता है।
- शिक्षक, स्वयंसेवी संस्थाएँ और शासकीय निकाय भी इन नवाचारों को जानेंगे परखेंगे और अपनाएँगे।
- प्रभावी योजना और सामुदायिक सहयोग व साथी शिक्षकों को प्रेरित कर के चलती-फिरती डिजिटल स्कूल और ओटला स्कूल के माध्यम से किस तरह बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में बनाये रखा, जिससे बच्चे सीख सके।

समूह आकलन और विद्यालय के अन्य शिक्षकों के साथ चर्चा हेतु प्रश्न

(इन प्रश्नों पर विचार करें, साप्ताहिक शिक्षक बैठक में अपने विद्यालय में इन के उत्तरों पर शिक्षकों के मध्य चर्चा और बहस करवाएं)

1. क्या अधिगम क्षति को नापा जा सकता है? कैसे? वैकल्पिक पद्धतियों पर शिक्षकों से चर्चा करें।
2. पुस्तकें पढ़ते हुए बच्चे का प्रश्न अथवा तर्क करने से हमें क्या समझना चाहिए?
3. आपके विद्यालय में हुई अधिगम क्षति का मापन करने हेतु आप क्या करेंगे?
4. ओटला स्कूल क्या सामान्य दिनों में भी उपयोगी हो सकता है? कैसे? अपने शिक्षक साथियों के साथ चर्चा करें।
5. नवाचार क्या होते हैं ? क्या इनका स्थायी होना आवश्यक है?

विद्यालय के लिए सुझावात्मक प्रोजेक्ट कार्य –

1. आपके विद्यालय में कक्षा 2 में हुई अधिगम क्षति के मापन हेतु एक योजना बनाएं।
2. अपने विद्यालय में विद्यार्थियों के परिवारों में डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता, उपयोगिता पर एक सर्वेक्षण करें।
3. आपके विद्यालय में उपलब्ध स्त्रोतों के माध्यम से किस प्रकार के डिजिटल उपकरणों की स्थाई व्यवस्था की जा सकती है ? इसका एक प्रस्ताव बनाएं।
4. कोविड काल में विद्यार्थियों के रोचक और नवाचारी अधिगम अनुभवों को दस्तावेजीकरण कर अपने जिले के डाइट को प्रेषित करें।

संदर्भ

1. शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
3. Loss of Learning during the Pandemic, NCERT
4. National Center for Leadership (NCSL) NCERT
5. Rapid Assessment of Learning During School Closures in the Context of Covid 19-2021(UNICEF).
6. Field Studies in Education-February – 2022 By- Azim Premji University.

लेखक का नाम
राजा राम अवस्थी
जिला स्त्रोत समूह (डाइट कटनी), म.प्र.

मेंटर/ एक्सपर्ट का नाम
राकेश देवांग
सहायक परियोजना समन्वयक (अकादमिक)
कार्यालय जिला शिक्षा केन्द्र, भोपाल
जिला - भोपाल, म.प्र.
मोबाइल- +91 9826405474
ई मेल- rakeshdewang448@gmail.com

❑❑❑